shardhanjali1:arunjaity.qxd 9/26/2010 8:16 PM Page 82

नाना, तुझे प्रणाम

विधान सभा सचिवालय
उत्तर प्रदेश

विधान सभा सचिवालय
उत्तर प्रदेश
(कार्यवाही अनुभाग)

प्रेशक,

श्री प्रदीप दुबे,
प्रमुख सचिव।

विधान भवन,
लखनऊ।
दिनांक : 31 अगस्त, 2010

सेवा में,

प्रधान सचिव,
दीनदयाल शोध संस्थान
7-ई, स्वामी रामतीर्थ नगर झण्डेवाला,
एक्सटेंशन, नई दिल्ली -110055

महोदय

उत्तर प्रदेश विधान सभा के दिनांक 9 अगस्त, 2010 उपवेशन में प्रसिद्ध समाजसेवी श्री नानाजी देशमुख के दुखद निधन पर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गयी तथा हार्दिक संवेदनाएं व्यक्त की गयी। तत्पश्चात दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए सदन में सभी सदस्यगण दो मिनट मौन खड़े हुए।

सदन में व्यक्त की गयी श्रद्धांजलि एवं हार्दिक संवेदनाओं की सूचना माननीय अध्यक्ष, विधान सभा के आदेशानुसार आपको प्रेषित की जा रही है।

भवदीय

प्रदीप दुबे
प्रमुख सचिव

बिहार विधान परिषद्
सत्र - 164
शोक - पुस्तिका
भाग - 2
22 फरवरी, 2010
31 मार्च, 2010

नाना देशमुख
11 अक्तूबर 1916– 27 फरवरी 2010

बिहार विधान परिषद्
सत्र — 164
शोक - पुस्तिका
भाग — 2
22 फरवरी, 2010
31 मार्च, 2010
श्री ताराकांत झा
सभापति
बिहार विधान परिषद्

स्वर्गीय नानाजी देशमुख

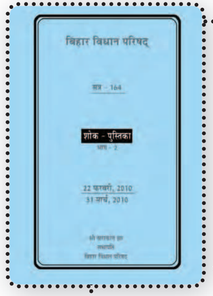

27 फरवरी, 2010 को सुप्रसिद्ध समाजसेवी एवं पूर्व सांसद, पद्मविभूषण माननीय श्री नानाजी देशमुख का निधन हो गया। मृत्यु के समय उनकी उम्र लगभग 94 वर्ष थी।

श्री देशमुख का जन्म 11 अक्तूबर, 1916 को महाराष्ट्र के परभणी जिले के कडोली गांव में हुआ था। श्री नानाजी देशमुख का पूरा नाम श्री चंडीराव देशमुख था।

श्री देशमुख 1977 से 1979 तक लोकसभा के सदस्य एवं 1999 में राज्य सभा के सदस्य बने।

श्री देशमुख 1928 से आजीवन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़े रहे। संघ की ओर से वे बिहार के प्रभारी भी रहे। उनमें संगठन क्षमता गजब की थी।

श्री देशमुख ने "राष्ट्रधर्म', "पाञ्चजन्य' एवं "दैनिक स्वदेश' का प्रकाशन शुरू कर समाज में अपनी पहचान बनाई। लोकनायक जयप्रकाश नारायण के संपूर्ण क्रांति आंदोलन में उनकी भूमिका बहुत महत्वपूर्ण रही। 4 नवम्बर, 1974 को पटना के आयकर गोलंबर के समीप लोकनायक जयप्रकाश नारायण पर पुलिस द्वारा लाठियों के प्रहार को उन्होंने अपने हाथों से रोका जिससे उनके हाथ की हड्डी टूट गई थी।

1977 में तत्कालीन प्रधानमंत्री द्वारा मंत्री पद के प्रस्ताव को श्री देशमुख ने अस्वीकार कर दिया था। उनका मानना था कि 60 वर्षो के बाद स्वेच्छा से राजनीति छोड़ देनी चाहिए।

पंडित दीनदयाल शोध संस्थान एवं सरस्वती शिशु मंदिर के वे संस्थापक भी रहे। श्री देशमुख ने गोंडा एवं चित्रकूट के लगभग 500 गांवों को चुनकर उनकी खुशहाली, उन्नति एवं विकास के लिए कार्य किया जिसमें लगभग 100 गांव आज प्रगति की राह पर हैं। वे चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय के कुलाधिपति भी रहे।

श्री देशमुख कई वर्षो तक भारतीय जनसंघ के अखिल भारतीय संगठन सचिव थे। उन्होंने कई देशों की यात्रा भी की। उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन समाज-सेवा में समर्पित कर दिया। उनके निधन से हम सभी को अपार दुःख है।

ईश्वर दिवंगत आत्मा को चिर शांति प्रदान करें तथा शोक संतप्त परिवार को धैर्य एवं शक्ति दें।